National Research Journal of Banking and Finance Management
Volume No: 12, Issue No: 2, Year: 2025 (July-December)
PP: 380-388
ISSN: 2349-6762
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.56)
Journal Website www.nrjbfm.in

न्यूनतम समर्थन मूल्य में वृद्धि और किसानों को मिलने वाले प्रोत्साहन: छत्तीसगढ़ में धान खरीद नीति का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

जितेन्द्र महोबिया

शोधार्थी

अनुसंधान विद्यवान शासकीय जे. योगानंदम छत्तीसगढ महाविद्यालय रायपुर (छ.ग.)

आशा रामटेके

निदेशक ,सहायक प्राध्यापक

शहीद नंदकुमार पटेल शासकीय महाविद्यालय, बिरगांव, रायपुर(छ.ग.)

अशोक कुमार शर्मा

सह निदेशक

प्राध्यापक शासकीय जे. योगानंदम् छत्तीसगढ महाविद्यालय रायपुर (छ.ग.)

संक्षेपिका

न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) भारत में कृषि उत्पादन, किसानों की आय और फसल संबंधी निर्णयों को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण नीतिगत साधन है। यह अध्ययन छत्तीसगढ़ में सामान्य और ग्रेड ए धान के लिए एमएसपी के रुझान और प्रभाव का विश्लेषण करता है, जिसमें 2018 के बाद देखे गए संरचनात्मक बदलाव पर विशेष जोर दिया गया है। खरीद मूल्यों के रुझान-आधारित विश्लेषण और नीति मूल्यांकन का उपयोग करते हुए, अध्ययन से पता चलता है कि एमएसपी में लगभग दो दशकों तक धीमी और रैखिक वृद्धि हुई, जो किसानों के लिए मजबूत आर्थिक प्रोत्साहन उत्पन्न करने के लिए अपर्याप्त थी।

राज्य सरकार द्वारा राजीव गांधी किसान न्याय योजना के माध्यम से पूरक मूल्य समर्थन शुरू करने के बाद एक बड़ा परिवर्तन आया, जिससे खरीद मूल्य केंद्र द्वारा घोषित एमएसपी से काफी अधिक हो गया। इस हस्तक्षेप से धान की खेती की लाभप्रदता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई, जिससे किसानों की प्रेरणा में सुधार हुआ, खरीद प्रणालियों में उनकी भागीदारी बढ़ी और आय सुरक्षा मजबूत हुई। प्रभावी एमएसपी को ₹3100 प्रति क्विंटल तक बढ़ाने से इस प्रवृत्ति को और बल मिला।

अध्ययन का निष्कर्ष है कि जहां बढ़ी हुई एमएसपी ने किसानों के व्यवहार और ग्रामीण आर्थिक स्थितियों को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया है, वहीं इससे राजकोषीय स्थिरता, बाजार विकृति और फसल विविधीकरण में कमी से संबंधित चिंताएं भी उत्पन्न होती हैं। इसलिए, दीर्घकालिक लाभ सुनिश्चित करने के लिए, एमएसपी नीति को विविधीकरण, उत्पादकता वृद्धि और सतत संसाधन उपयोग पर केंद्रित व्यापक कृषि रणनीतियों के साथ एकीकृत किया जाना चाहिए।

कीवर्ड: न्यूनतम समर्थन मूल्य, धान, छत्तीसगढ़, कृषि नीति, किसान आय, मूल्य प्रोत्साहन

1. परिचय

भारत में कृषि मूल्य निर्धारण नीतियों ने ऐतिहासिक रूप से किसानों के व्यवहार, फसल चयन और ग्रामीण आय स्थिरता को प्रभावित करने में निर्णायक भूमिका निभाई है। इनमें से, न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) एक प्रमुख नीतिगत उपकरण रहा है जिसका उद्देश्य राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा की रक्षा करते हुए किसानों के लिए लाभकारी मूल्य सुनिश्चित करना है। छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों में, जहां धान की प्रमुख फसल है, एमएसपी का महत्व और भी बढ़ जाता है क्योंकि यह सीधे तौर पर अधिकांश कृषि परिवारों की आजीविका को प्रभावित करता है।

© Copyright @ Authors

ISSN: 2349-6762
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.56)
Journal Website www.nrjbfm.in

इसके महत्व के बावजूद, धान के लिए एमएसपी संशोधन लंबे समय तक मामूली रहे, जैसा कि 2000 के दशक की शुरुआत से लेकर लगभग 2017 तक की क्रमिक वृद्धि से स्पष्ट होता है। यह धीमी वृद्धि अक्सर बढ़ती इनपुट लागतों के साथ तालमेल बिठाने में विफल रही, जिससे प्रोत्साहन तंत्र के रूप में इसकी प्रभावशीलता सीमित हो गई। किसानों को सीमित लाभप्रदता का सामना करना पड़ा, जिससे धान की खेती के प्रति उत्साह कम हुआ और उन्नत कृषि पद्धतियों में निवेश सीमित हो गया।

2018 में एक बड़ा नीतिगत बदलाव आया जब छत्तीसगढ़ सरकार ने एक उन्नत खरीद ढांचा पेश किया। धान के लिए केंद्र सरकार द्वारा न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) 1770 रुपये प्रति क्विंटल घोषित किया गया था, जबकि राज्य सरकार ने राजीव गांधी किसान न्याय योजना के माध्यम से किसानों की आय में वृद्धि की, जिससे प्रभावी रूप से प्रति क्विंटल लाभ बढ़कर 2500 रुपये और बाद में 2023-2024 में 3100 रुपये प्रति क्विंटल हो गया। इस पहल ने धान की खेती की आर्थिक आकर्षण क्षमता को पूरी तरह से बदल दिया।

यह अध्ययन एमएसपी के रुझान का गहन विश्लेषण करता है और मूल्यांकन करता है कि नीतिगत प्रोत्साहन से प्रेरित मूल्य वृद्धि ने किसानों के प्रोत्साहन, फसल व्यवहार और राज्य में समग्र कृषि परिदृश्य को किस प्रकार प्रभावित किया।

2. अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध कार्य के उद्देश्य इस प्रकार हैं –

1. सामान्य और ग्रेड ए धान के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) के रुझान का समय के साथ विश्लेषण करना।
2. 2018 से पहले किसानों की प्रेरणा पर एमएसपी की धीमी वृद्धि के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. छत्तीसगढ़ में बढ़ी हुई खरीद मूल्य नीतियों के प्रभाव का मूल्यांकन करना।
4. कृषि संबंधी निर्णय लेने पर एमएसपी सुधारों के प्रभावों का आकलन करना।

3. साहित्य समीक्षा

शोध से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण शोध कार्यों की समीक्षा इस प्रकार है –

एमएसपी और कृषि प्रोत्साहन

अशोक गुलाटी के शोध से पता चलता है कि एमएसपी एक मूल्य संकेत के रूप में कार्य करता है जो फसल संबंधी निर्णयों और निवेश व्यवहार को प्रभावित करता है। अध्ययन में तर्क दिया गया है कि जब एमएसपी बढ़ती इनपुट लागतों की पर्याप्त भरपाई करने में विफल रहता है, तो किसान इनपुट की तीव्रता कम करने या वैकल्पिक फसलों की ओर रुख करने लगते हैं। इसमें इस बात पर जोर दिया गया है कि प्रभावी एमएसपी नीतियों को केवल लागत की भरपाई करने के बजाय लाभप्रदता सुनिश्चित करनी चाहिए। ये निष्कर्ष छत्तीसगढ़ में देखी गई ठहराव की स्थिति से मेल खाते हैं, जहां 2018 से पहले एमएसपी की धीमी वृद्धि ने किसानों के उत्साह को सीमित कर दिया था।

राज्य हस्तक्षेप और मूल्य समर्थन तंत्र

टी. हक द्वारा किए गए एक अध्ययन में कृषि मूल्य समर्थन प्रणालियों को मजबूत करने में राज्य स्तरीय हस्तक्षेपों की भूमिका का विश्लेषण किया गया है। शोध से यह निष्कर्ष निकलता है कि केंद्रीय न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) के अतिरिक्त पूरक प्रोत्साहन किसानों की आय और उत्पादन को काफी हद तक बढ़ा सकते हैं, विशेष रूप से उन राज्यों में जहां एक ही फसल पर अत्यधिक निर्भरता है। अध्ययन में यह

© Copyright @ Authors

ISSN: 2349-6762
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.56)
Journal Website www.nrjbfm.in

चेतावनी भी दी गई है कि ऐसे हस्तक्षेपों को राजकोषीय स्थिरता और फसल विविधीकरण रणनीतियों के साथ संतुलित किया जाना चाहिए।

4. एमएसपी रुझानों और नीतिगत प्रभाव का विश्लेषण (विस्तारित और विस्तृत)

सामान्य और ग्रेड ए धान के एमएसपी रुझानों के विश्लेषण से छत्तीसगढ़ की कृषि मूल्य निर्धारण प्रणाली में दो चरणों का स्पष्ट रुझान सामने आता है: 2000-2001 से 2017-2018 तक क्रमिक वृद्धि का एक लंबा चरण, जिसके बाद 2018 के बाद नीतिगत रूप से प्रेरित तीव्र वृद्धि हुई। यह संरचनात्मक परिवर्तन किसानों के प्रोत्साहन, उत्पादन व्यवहार और व्यापक ग्रामीण अर्थव्यवस्था को समझने के लिए महत्वपूर्ण है।

तालिका 1 छत्तीसगढ़ राज्य में सामान्य धान का न्यूनतम समर्थन मूल्य

वर्ष	**सामान्य धान (₹ प्रति क्विंटल)**	**दो निरंतर वर्षों के मध्य समर्थन मूल्य में परिवर्तन**	% परिवर्तन
2000-2001	540		
2001-2002	560	20	3.7037
2002-2003	560	0	0
2003-2004	580	20	3.5714
2004-2005	590	10	1.7241
2005-2006	600	10	1.6949
2006-2007	610	10	1.6667
2007-2008	675	65	10.6557
2008-2009	880	205	30.3704
2009-2010	980	100	11.3636
2010-2011	1030	50	5.102
2011-2012	1080	50	4.8544
2012-2013	1280	200	18.5185
2013-2014	1345	65	5.0781
2014-2015	1400	55	4.0892
2015-2016	1450	50	3.5714
2016-2017	1510	60	4.1379
2017-	1590	80	5.298

© Copyright @ Authors

ISSN: 2349-6762
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.56)
Journal Website www.nrjbfm.in

2018			
2018-2019	1770	180	11.3208
2019-2020	1835	65	3.6723
2020-2021	1815	-20	-1.0899
2021-2022	1940	125	6.8871
2022-2023	2040	100	5.1546
2023-2024	2183	143	7.0098

स्रोत : आगणित

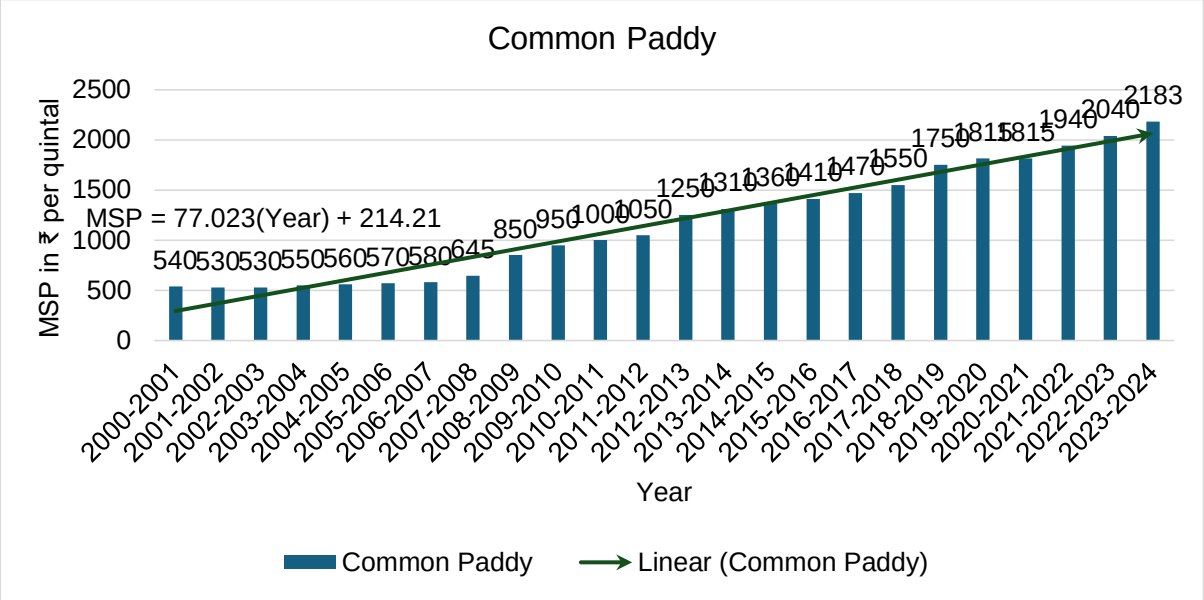

चित्र 1 सामान्य धान के न्यूनतम समर्थन मूल्य में उपस्थित प्रवृत्ति

पहले चरण में, सामान्य धान का न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) लगभग 17 वर्षों में बढ़कर लगभग ₹540 प्रति क्विंटल से बढ़कर लगभग ₹1550-₹1750 प्रति क्विंटल हो गया। ग्रेड ए धान के लिए भी ऐसा ही रुझान देखा गया, जिसका मूल्य ₹560 से बढ़कर लगभग ₹1770 प्रति क्विंटल हो गया। हालांकि नाममात्र कीमतों में वृद्धि का रुझान दिखता है, लेकिन वृद्धि की दर अपेक्षाकृत रैखिक और मामूली थी, जैसा कि आंकड़ों में दिए गए रुझान समीकरणों से पता चलता है। इससे संकेत मिलता है कि एमएसपी संशोधन क्रमिक थे, न कि गतिशील लागत संरचनाओं के प्रति प्रतिक्रियाशील।

जब इस रुझान की वास्तविक रूप में व्याख्या की जाती है, जिसमें उर्वरक, डीजल, श्रम मजदूरी और सिंचाई खर्च जैसे बढ़ते इनपुट लागतों को समायोजित किया जाता है, तो किसानों की प्रभावी लाभप्रदता सीमित ही रही। कई मामलों में, एमएसपी में वृद्धि खेती की लागत में वृद्धि से पीछे रह गई। इससे मूल्य प्रोत्साहन तंत्र कमजोर हुआ और किसानों की कृषि में पुनर्निवेश करने की क्षमता सीमित हो गई। परिणामस्वरूप, इस चरण के दौरान, किसानों ने अक्सर जोखिम कम करने वाली रणनीतियाँ अपनाईं, जैसे कि कम इनपुट का उपयोग, पारंपरिक बीज किस्में और सीमित मशीनीकरण।

© Copyright @ Authors

ISSN: 2349-6762
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.56)
Journal Website www.nrjbfm.in

तालिका 2 छत्तीसगढ़ राज्य में ए ग्रेड धान का न्यूनतम समर्थन मूल्य

वर्ष	**सामान्य धान (₹ प्रति क्विंटल)**	**दो निरंतर वर्षों के मध्य समर्थन मूल्य में परिवर्तन**	% परिवर्तन
2000-2001	540		
2001-2002	560	20	3.7037
2002-2003	560	0	0
2003-2004	580	20	3.5714
2004-2005	590	10	1.7241
2005-2006	600	10	1.6949
2006-2007	610	10	1.6667
2007-2008	675	65	10.6557
2008-2009	880	205	30.3704
2009-2010	980	100	11.3636
2010-2011	1030	50	5.102
2011-2012	1080	50	4.8544
2012-2013	1280	200	18.5185
2013-2014	1345	65	5.0781
2014-2015	1400	55	4.0892
2015-2016	1450	50	3.5714
2016-2017	1510	60	4.1379
2017-2018	1590	80	5.298
2018-2019	1770	180	11.3208
2019-2020	1835	65	3.6723
2020-2021	1815	-20	-1.0899
2021-2022	1940	125	6.8871
2022-	2040	100	5.1546

© Copyright @ Authors

ISSN: 2349-6762
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.56)
Journal Website www.nrjbfm.in

2023			
2023-2024	2183	143	7.0098

स्रोत : आगणित

एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू है किसानों की मूल्य संकेतों के प्रति व्यवहारिक प्रतिक्रिया। न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) में अपेक्षाकृत धीमी वृद्धि से धान की खेती बढ़ाने या उत्पादकता में सुधार करने के लिए कोई मजबूत आर्थिक प्रोत्साहन नहीं मिला। इसके बजाय, इसने निर्वाह-उन्मुख कृषि पद्धतियों को बढ़ावा दिया, जहां किसान मुख्य रूप से जीविका चलाने और न्यूनतम आय के लिए धान की खेती करते हैं, न कि लाभ को अधिकतम करने के लिए। यह विशेष रूप से छत्तीसगढ़ में प्रासंगिक है, जहां किसानों का एक बड़ा हिस्सा लघु और सीमांत किसान हैं जिनकी जोखिम वहन क्षमता सीमित है।

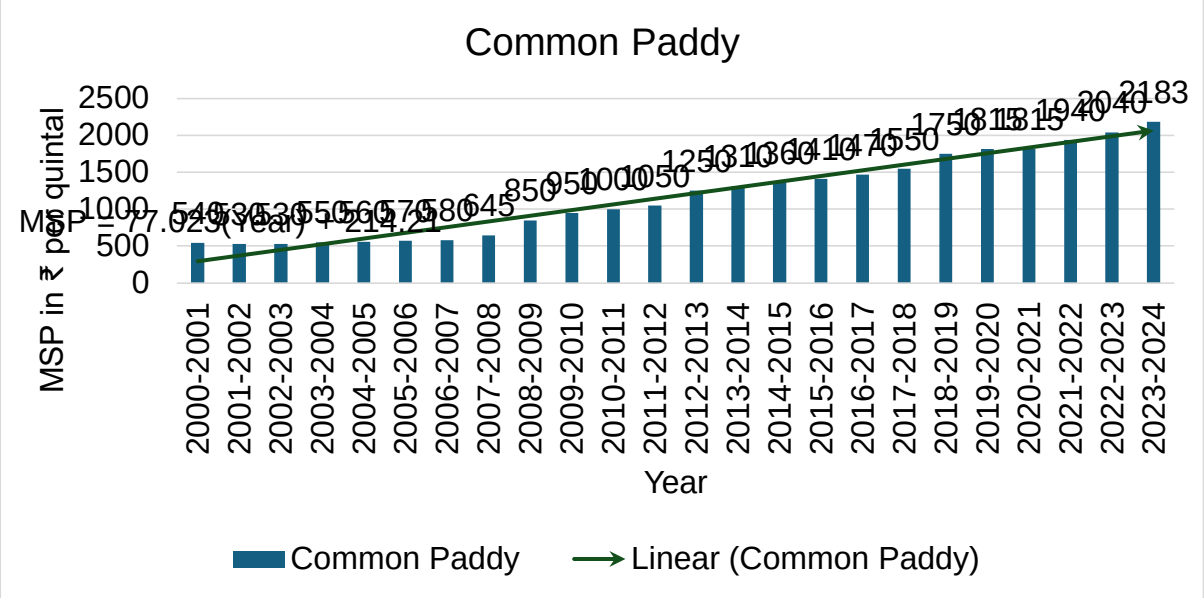

चित्र 2 ए ग्रेड धान के न्यूनतम समर्थन मूल्य में उपस्थित प्रवृत्ति

2018 में शुरू हुआ दूसरा चरण, एमएसपी व्यवस्था में एक स्पष्ट संरचनात्मक परिवर्तन को दर्शाता है। राज्य सरकार के राजीव गांधी किसान न्याय योजना के माध्यम से हस्तक्षेप ने खरीद मूल्य को केंद्रीय एमएसपी ₹1770 से बढ़ाकर ₹2500 प्रति क्विंटल कर दिया। यह केवल मामूली समायोजन नहीं था, बल्कि प्रभावी प्रतिफल में 40 प्रतिशत से अधिक की महत्वपूर्ण वृद्धि थी। इस तरह की महत्वपूर्ण वृद्धि ने कृषि परिवारों के आर्थिक समीकरण को बदल दिया।

आर्थिक दृष्टिकोण से, इस नीतिगत बदलाव ने धान की खेती से अपेक्षित प्रतिफल को बढ़ाया, जिससे अन्य फसलों की तुलना में इसकी सापेक्ष लाभप्रदता में वृद्धि हुई। किसानों ने कीमतों में इस मजबूती के संकेत पर सकारात्मक प्रतिक्रिया देते हुए खेती का क्षेत्रफल बढ़ाया, इनपुट का बेहतर उपयोग किया और खरीद प्रणालियों में अधिक सक्रिय रूप से भाग लिया। उच्च और अपेक्षाकृत स्थिर आय के आश्वासन ने अनिश्चितता को कम किया और संस्थागत तंत्रों के साथ अधिक जुड़ाव को प्रोत्साहित किया।

2023-2024 में ₹3100 प्रति क्विंटल की बाद की वृद्धि ने इस प्रवृत्ति को और मजबूत किया। मूल्य समर्थन के इस स्तर ने धान को इस क्षेत्र की सबसे आकर्षक फसलों में से एक बना दिया, जिससे यह प्रभावी रूप से उच्च लाभ वाली कृषि गतिविधि में परिवर्तित हो गई। बढ़े हुए एमएसपी का ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर भी गुणक प्रभाव पड़ा, जिसमें क्रय शक्ति में वृद्धि, उपभोग व्यय में वृद्धि और शिक्षा, स्वास्थ्य और कृषि संपत्तियों में निवेश करने की क्षमता में सुधार शामिल है।

© Copyright @ Authors

ISSN: 2349-6762
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.56)
Journal Website www.nrjbfm.in

हालांकि, विश्लेषण कुछ महत्वपूर्ण चिंताओं को भी उजागर करता है। धान के लिए मजबूत मूल्य प्रोत्साहन एक ही फसल पर अत्यधिक निर्भरता को जन्म दे सकता है, जिससे दलहन, तिलहन या बागवानी में विविधीकरण हतोत्साहित हो सकता है। इससे जलवायु संबंधी जोखिमों के प्रति संवेदनशीलता बढ़ सकती है और दीर्घकालिक स्थिरता कम हो सकती है। इसके अतिरिक्त, उच्च खरीद मूल्य राज्य पर एक महत्वपूर्ण राजकोषीय बोझ डालते हैं, जिससे इस तरह के समर्थन तंत्र की दीर्घकालिक व्यवहार्यता पर प्रश्न उठते हैं।

एक अन्य उभरता हुआ मुद्दा बाजार संकेतों में संभावित विकृति है। जब एमएसपी-आधारित कीमतें बाजार संतुलन स्तरों से काफी अधिक हो जाती हैं, तो इससे संसाधन आवंटन में अक्षमताएं उत्पन्न हो सकती हैं। किसान उच्च पारिस्थितिक या पोषण मूल्य वाली फसलों की तुलना में सुनिश्चित खरीद वाली फसलों को प्राथमिकता दे सकते हैं। इस असंतुलन का असर मिट्टी के स्वास्थ्य, जल उपयोग और समग्र कृषि स्थिरता पर पड़ सकता है।

संक्षेप में, विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि छत्तीसगढ़ में एमएसपी सुधारों ने किसानों को प्रोत्साहन देने और आय स्तर में सुधार करने में सफलता प्राप्त की है, लेकिन साथ ही स्थिरता, विविधीकरण और राजकोषीय प्रबंधन से संबंधित नई चुनौतियां भी खड़ी की हैं। इसलिए, एमएसपी की नीतिगत प्रभावशीलता न केवल मूल्य वृद्धि पर निर्भर करती है, बल्कि व्यापक कृषि विकास रणनीतियों के साथ इसके एकीकरण पर भी निर्भर करती है।

5. निष्कर्ष

छत्तीसगढ़ में सामान्य और ग्रेड ए धान के न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) के रुझानों के विश्लेषण से पता चलता है कि 2018 के बाद से क्रमिक वृद्धि के एक लंबे चरण से नीतिगत रूप से प्रेरित निर्णायक बदलाव आया है। इससे पहले, एमएसपी में वृद्धि स्थिर लेकिन मामूली थी, जो खेती की बढ़ती लागत के साथ तालमेल बिठाने में विफल रही। परिणामस्वरूप, मूल्य तंत्र किसानों के लिए एक मजबूत प्रोत्साहन के रूप में काम नहीं कर पाया, और धान की खेती काफी हद तक निर्वाह-उन्मुख बनी रही, जिसमें उत्पादकता वृद्धि या आय वृद्धि की सीमित संभावनाएं थीं।

राज्य सरकार के हस्तक्षेप ने पूरक समर्थन के माध्यम से प्रभावी खरीद मूल्य में उल्लेखनीय वृद्धि करके एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित किया। इस नीति ने न केवल धान की खेती की लाभप्रदता में सुधार किया, बल्कि संस्थागत मूल्य निर्धारण तंत्र में किसानों का विश्वास भी बहाल किया। एमएसपी में तीव्र वृद्धि ने किसानों के आर्थिक व्यवहार को बदल दिया, जिससे इनपुट में अधिक निवेश, खरीद प्रणालियों में अधिक भागीदारी और बाजार-उन्मुख उत्पादन की ओर बदलाव को प्रोत्साहन मिला। ₹3100 प्रति क्विंटल की वृद्धि ने इस परिवर्तन को और मजबूत किया, जिससे धान इस क्षेत्र में एक अत्यधिक आकर्षक फसल बन गई।

साथ ही, अध्ययन इस बात पर प्रकाश डालता है कि उच्च एमएसपी से तत्काल आर्थिक लाभ तो मिले हैं, लेकिन इससे संरचनात्मक चिंताएँ भी उत्पन्न होती हैं। एक ही फसल पर बढ़ती निर्भरता से विविधीकरण में कमी, पारिस्थितिक असंतुलन और जलवायु जोखिमों के प्रति संवेदनशीलता में वृद्धि हो सकती है। इसके अलावा, लगातार उच्च खरीद मूल्य राज्य पर राजकोषीय दबाव डालते हैं और यदि व्यापक कृषि नीतियों के अनुरूप नहीं हैं, तो बाजार की गतिशीलता को बिगाड़ सकते हैं। इसलिए, एमएसपी में वृद्धि अल्पावधि से मध्यम अवधि में आय सहायता रणनीति के रूप में प्रभावी सिद्ध हुई है, लेकिन इसकी दीर्घकालिक सफलता उत्पादकता, स्थिरता और विविधीकरण से संबंधित पूरक उपायों पर निर्भर करती है।

6. सुझाव

बढ़ी हुई एमएसपी के लाभों को सतत कृषि विकास में तब्दील करने के लिए, एक संतुलित और बहुआयामी नीतिगत दृष्टिकोण आवश्यक है। पहला, प्रभावी मूल्य समर्थन तंत्र के रूप में इसकी प्रासंगिकता बनाए रखने के लिए एमएसपी नीति को समय-समय पर खेती की लागत और मुद्रास्फीति के अनुरूप समायोजित किया

© Copyright @ Authors

ISSN: 2349-6762
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.56)
Journal Website www.nrjbfm.in

जाना चाहिए। अचानक वृद्धि के बजाय, एक पूर्वानुमानित और तर्कसंगत संशोधन ढांचा स्थिरता प्रदान कर सकता है और राजकोषीय दबाव को कम कर सकता है। दूसरा, एमएसपी समर्थन के साथ-साथ फसल विविधीकरण को बढ़ावा देने की प्रबल आवश्यकता है। धान पर अत्यधिक निर्भरता को कम करने और मृदा स्वास्थ्य के साथ-साथ पोषण सुरक्षा में सुधार करने के लिए दलहन, तिलहन और बागवानी फसलों की खेती के लिए प्रोत्साहन को मजबूत किया जाना चाहिए। यह सुनिश्चित खरीद, मूल्य समर्थन और वैकल्पिक फसलों के लिए विस्तार सेवाओं के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। तीसरा, सिंचाई, भंडारण सुविधाओं और परिवहन नेटवर्क जैसे कृषि अवसंरचना में निवेश को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। बेहतर अवसंरचना न केवल फसल कटाई के बाद होने वाले नुकसान को कम करेगी बल्कि किसानों की बाजारों तक पहुंच को भी बढ़ाएगी, जिससे एमएसपी के लाभों का पूरक होगा। चौथा, खरीद केंद्रों जैसे संस्थागत तंत्रों को मजबूत करना और किसानों को समय पर भुगतान सुनिश्चित करना प्रणाली में विश्वास को और बढ़ाएगा। खरीद प्रक्रियाओं में पारदर्शिता और दक्षता बढ़ाने के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग किया जा सकता है। पांचवां, एमएसपी नीति को उत्पादकता बढ़ाने की रणनीतियों के साथ एकीकृत करने के प्रयास किए जाने चाहिए। अधिक उपज देने वाली किस्मों को बढ़ावा देना, कुशल जल प्रबंधन पद्धतियां और मशीनीकरण किसानों को लागत में आनुपातिक वृद्धि किए बिना अधिक उत्पादन प्राप्त करने में मदद कर सकते हैं। अंत में, एमएसपी नीतियों और राज्य स्तरीय हस्तक्षेपों की निरंतर निगरानी और मूल्यांकन को संस्थागत रूप दिया जाना चाहिए। किसानों से प्राप्त प्रतिक्रिया और जमीनी स्तर के आंकड़ों के आधार पर नीतिगत सुधारों को निर्देशित किया जाना चाहिए ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि सहायता तंत्र बदलती कृषि और आर्थिक स्थितियों के प्रति संवेदनशील बने रहें। संक्षेप में, छत्तीसगढ़ में एमएसपी वृद्धि ने किसानों को प्रोत्साहन देने में सफलतापूर्वक सुधार किया है, लेकिन इसकी दीर्घकालिक प्रभावशीलता इस बात पर निर्भर करेगी कि इसे स्थिरता, विविधीकरण और समावेशी कृषि विकास के व्यापक लक्ष्यों के साथ कितनी अच्छी तरह एकीकृत किया जाता है।

संदर्भ

1. Chand, R. (2016). *Doubling farmers' income: Rationale, strategy, prospects and action plan*. National Institution for Transforming India (NITI Aayog).
2. Gulati, A., & Saini, S. (2015). *Farm incomes in India: Strategy for accelerated growth*. Indian Council for Research on International Economic Relations.
3. Haque, T. (2017). *Agricultural policy and performance in India*. Oxford University Press.
4. Ministry of Agriculture & Farmers Welfare. (2023). *Agricultural statistics at a glance*. Government of India.
5. National Bank for Agriculture and Rural Development (NABARD). (2022). *Status of rural credit in India*. NABARD Publications.
6. Reserve Bank of India. (2023). *Report on trend and progress of banking in India*. RBI Publications.
7. Government of Chhattisgarh. (2023). *Economic survey of Chhattisgarh*. Directorate of Economics and Statistics.
8. Commission for Agricultural Costs and Prices. (2023). *Price policy for Kharif crops*. Ministry of Agriculture & Farmers Welfare, Government of India.
9. Dev, S. M. (2012). *Small farmers in India: Challenges and opportunities*. Indira Gandhi Institute of Development Research.

© Copyright @ Authors

ISSN: 2349-6762
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.56)
Journal Website www.nrjbfm.in

10. Planning Commission. (2011). *Report of the working group on agricultural marketing infrastructure and policy required for internal and external trade*. Government of India.

© Copyright @ Authors